

मूर्ख मित्र-पंचतंत्र

किसी राजा के राजमहल में एक बन्दर सेवक के रूप में रहता था । वह राजा का बहुत विश्वास-पात्र और भक्त था । अन्तःपुर में भी वह बेरोक-टोक जा सकता था ।

एक दिन जब राजा सो रहा था और बन्दर पङ्खा झूल रहा था तो बन्दर ने देखा, एक मक्खी बार-बार राजा की छाती पर बैठ जाती थी । पंखे से बार-बार हटाने पर भी वह मानती नहीं थी, उड़कर फिर वहीं बैठी जाती थी ।

बन्दर को क्रोध आ गया । उसने पंखा छोड़ कर हाथ में तलवार ले ली; और इस बार जब मक्खी राजा की छाती पर बैठी तो उसने पूरे बल से मक्खी पर तलवार का हाथ छोड़ दिया । मक्खी तो उड़ गई, किन्तु राजा की छाती तलवार की चोट से दो टुकड़े हो गई । राजा मर गया ।

"मूर्ख मित्र की अपेक्षा विद्वान् शत्रु ज्यादा अच्छा होता है।"

अनुवाद - कुलदीप धर

भक्त भिड़-पंढरुंउ

किमी गार के गारभरुल में एक गनु मवक के रूप में गुरुता था। वरु गार का गुरुत विष्णुम-पाउं उर रुकु था। मनुःपुर में ही वरु गैरेक-ऐक र मकता था।

एक दिन एग गार में गुरुता था उर गनु परापा उल गुरुता था उे गनु ने टोपा, एक भक्ती गार-गार गार की काती पर गैरे एती थी। पंढे में गार-गार रुएने पर ही वरु भानती नकीं थी, उरुकर द्दिर वकीं गैरी एती थी।

गनु के क्केण सु गथा। उमने पंपा केरु कर काष में उलवार ले ली; उर उम गार एग भक्ती गार की काती पर गैरी उे उमने पूरे गल में भक्ती पर उलवार का काष केरु द्दिरा। भक्ती उे उरु गरें, किनु गार की काती उलवार की गेए में दे एकके के गरें। गार भर गथा।

"भक्त भिड़ की मपेखा विष्णुना मडु एरु मरुता केउ कै।"

मनुवार - कुलदीप पर